Anusandhanvallari
Vol 2023, No.1
December 2023
ISSN 2229-3388

वैश्वीकरण से प्रभावित भारतीय समाज सशक्त चित्रण : मुन्नी मोबइल

डॉ. साहेब हुसेन जहागीरदार

सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग. अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

विजयपुर (कर्नाटक)

Email: sjjahagirdar123@gmail.com

पेशे से पत्रकार प्रदीप सौरभ का यह पहला उपन्यास है। इस उपन्यास के लोकार्पण के समय प्रो.राजेन्द्र कुमार इस उपन्यास के सन्दर्भ में कहते हैं कि, "भूमंडलीकरण" समाज को जोड़ता नहीं बल्कि बांटता है। एक नहीं होने देता। और सांप्रदायिकता भी यही काम करती है। इस दोनों सन्दर्भों में प्रदीप सौरभ का उपन्यास मुन्नी मोबाईल काफी अहम है। यह उपन्यास सांप्रदायिकता और भूमंडलीकरण, दोनों के खतरों से लोगों को आगाह करता है।"[1] यह उपन्यास यथार्थ के अत्यधिक नजदीक है, इसलिए उपन्यासकार उपन्यास के आरंभ में ही लिखता है कि, "इस उपन्यास के नायकों-खलनायकों को मैं काल्पनिक कहने का साहस नहीं जुटा पा रहा हूँ।"[2] उपन्यास का मुख पात्र बिन्दू यादव उर्फ मुन्नी मोबाईल के ईर्द-गिर्द कथानक का ताना-बाना बुना गया है। कथानक मुन्नी मोबाइल नाम की इस महिला की जिंदगी से रू-ब-रू होता है, जिसका सफर एक सीधी-सादी नौकरानी के रूप में शुरु होकर वेश्यावृत्ति करवानेवाली महिला के रूप में अंत होता है। कथानक का आरंभ पत्रकार आनंद भारती के घर से होता है। आनंद भारती एक तेज-तर्रार और गंभीर पत्रकार है। मुन्नी बिहार से आकर दिल्ली से सटे साहिबाबाद में बसी हुई एक साधारण नौकरानी है जो आनंद भारती के घर में कामवाली है। उसके चरित्र का एक विशिष्ट पहलू है –दंबगता और महत्वाकांक्षा। एक आम आदमी की तरह उसकी भी इच्छा थी कि उसकी बेटियाँ पढ़ लिख कर साहब बन जाएं। अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए मुन्नी मोबाइल ने जो सफर पत्रकार आनंद भारती के घर से शुरू किया। आगे चलकर वह कामवालियों की यूनियन, साहिबाबाद के चौधरियों से पंगा, डाक्टरी के साथ नर्सिंग के अवैध धंधों, गाजियाबाद और पहाडगंज रूट की बसों के फर्राटा भरते पहियों के साथ चलता हुआ अंत में कॉलगर्ल्स के रैकेट और मुन्नी मोबाईल के मर्डर के साथ पूरा होता है। मुन्नी की कहानी के माध्यम से उपन्यास में अनेक समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता, निर्देशक डॉ.चंद्रप्रकाश द्विवेदी का कथन है, "मेरी दृष्टि में प्रदीप सौरभ बिहार बक्सर की मुन्नी की यात्रा के साथ पाठकों को उस दलदल की यात्रा पर भी ले जाते हैं, जो मुन्नी मोबाइल के चारों ओर बिखरा पड़ा है। साहिबाबाद की झुग्गी-झोपड़ियों में बसे गर्भपात केंद्र से लेकर, देश की राजधानी दिल्ली में फैले शरीर धंधे तक! गोधरा की आग और गुजरात के दंगों से होकर, साहिबाबाद के गली-कूचों से गुजरती ब्लू लाइन बस से अनेक ठौर –ठिकानों की सैर कराती मुन्नी की रहस्यमय हत्या पर खत्म होती मुन्नी मोबाइल की कहानी हमारे समाज की मोबाइल क्रांति के बाद की कहानी है।"[3]

इस उपन्यास में पिछले २०-२५ वर्षों के भारत की शायद ही कोई समस्या छूटी हो- शहरीकरण, शहरों का असमान विकास, झुग्गी समस्या, वैयक्तिक व्यवहार की समस्या, जल समस्या, प्रदूषण, नदी सफाई कार्यक्रमों की असफलता, सबप्राइम संकट, आर्थिक मंदी, समलैंगिकता, गुंडागर्दी, कालगर्ल समस्या आदि। दिल्ली, इलाहाबाद, लंदन, अमेरिका, कोलकत्ता आदि शहरों से जुड़ा जीवन है, पर इनका यहाँ केवल विहंगावलोकन ही है। यहाँ समस्याओं, तथ्यों, सन्दर्भों की बाढ़ है। पूरे उपन्यास में संवेदना और संवेगों की झनझनाहट हैं।"[4]

पिछले 20-25 वर्षों से भारत में जितनी भी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, उसके पीछे मुख्य रूप से तीन घटनाएँ काम कर रहीं हैं- भारतीय बाजारों का मुक्त होना, सांप्रदायिकता और संचार क्रांति। दूसरे शब्दों में कहें तो भूमंडलीकरण और उत्तर आधुनिक पूंजीवादी विकास ने समाज के पुराने ढाँचे को तितर-बितर कर दिया है। समाज का बृहदतर परिप्रेक्ष्य सिमट कर व्यक्ति केंद्रित हो गया है। भूमंडलीकरण के बाद विकसित हुई इस संचार क्रांति ने शहर से लेकर गाँव, बूढ़े से लेकर बच्चे तथा अमीर से लेकर गरीब तक को प्रभावित किया है। हर एक घर तथा हर व्यक्ति के पास इंटरनेट से लैस कंप्यूटर तथा मोबाइल हैं। मोबाइल का प्रचलन तो काफी बढ़ चूका है। इसका अंकन इस उपन्यास में बहुत ही सुंदर ढंग से किया गया है। आनंद

भारती की नौकरानी बिन्दू उर्फ मुन्नी मोबाइल जिद किए बैठी है। वह आनंद भारती से कहती है, "मोबाईल चाहिए मुझे! मोबाइल।"[5] घोर उपयोगितावाद के इस बाजारू युग में कोई अनपढ़ कैसे उपयोगितावाद के चरम को छूता है। मुन्नी इसका प्रमाण है। बाजारवाद तथा उपभोक्तावाद के इस दौर में ब्रांडेड चीजों की ललक हर व्यक्ति में दिखाई देती है, मुन्नी भी इससे अछूती नहीं है। जब आनदं भारती द्वारा उसे मोबाइल खरीद कर दिया जाता है तो सबसे पहले वह यही पूछती है कि, "नोकिया का है ना?"[6] मोबाइल क्रांति के बाद आज हर व्यक्ति मोबाइल को सबसे अधिक आवश्यकता की वस्तु मान बैठा है। रात-दिन उसी में मग्न रहता है, इसका उदाहरण इस उपन्यास में मिलता है। मुन्नी जब खाना बनाने के समय मोबाइल में बतियाती रहती है तब रोटी जलने की भी उसे होश नहीं रहती तो आनन्द भारती चीखते हुए आवाज लगते हैं, "ऐ मुन्नी मोबाइल।"[7]

भूमंडलीकरण के बाद हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा की होड़ मची हुई है। मिडिया का भी व्यावसायीकरण हुआ है। बाजार की शक्तियों के आगे वह भी नतमस्तक हो गया है। गुजरात के दंगों में मिडिया दो भागों में बँट गई थी। एक वर्ग दंगों के गुनहगारों की पहचान कर रहा था, तो दूसरा वर्ग दंगाइयों को दंगा करने के लिए उकसा रहा था। इस संदर्भ में उपन्यासकार लिखता है कि "असल में आजादी के बाद विकसित हुआ देश का मीडिया बाजार की रखैल बन गया। उसके पास न तो कोई सपना है न ही समाज के प्रति कोई प्रतिबध्दता। वह एक उद्योग में तब्दील हो चुका है। लाभ कमाना और सत्ता के गलियारों में दबाव बनाना उसका एकमात्र उद्देश्य है।"[8]

आर्थिक मंदी ने सारे विश्व को प्रभावित किया था। भूमंडलीकरण के माध्यम से विश्व के सारे देश एक दूसरे पर निर्भर हैं। जब अमेरिका में आर्थिक मंदी का दौर चल रहा था तो उसने सारे विश्व को अपनी चपेट में लिया था। उपन्यासकार इस उपन्यास में उसका वर्णन करते हुए कहता है कि, "अमेरिका के सबप्राइम संकट से पूरी दुनिया में आर्थिक मंदी का दौर शुरू हो चुका था। चारों तरफ हाहाकार मच गया था। भारत भी इस संकट से अछूता नहीं रहनेवाला था। हजारों नौकरियां जा रही थीं। अमीरिकियों की लेकर की जानेवाली मौज मस्ती पर विराम लग गया था। वेकेंड को धर्म उधार की तरह मनानेवाले अमेरिकियों को बाजार से लोन मिलना मुश्किल हो रहा था।"[9]

भूमंडलीकरण ने भारतीय युवाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है। पाश्चात्य अपसंस्कृति को भारतीय युवा धडल्ले से अपना रहे हैं। भारतीय समाज में विवाह को एक पवित्र बंधन माना जाता है। आज विवाह बस एक फैशन बनकर रह गया है। आनंद भारती के फ्लैट के सामने रहनेवाली लडकी के तीन-तीन शादियाँ हो चुकी हैं। भारत के खान-पान की जगह पाश्चात्य पिज्जा संस्कृति ने ली है। इस संदर्भ में लेखक कहते हैं, "पिज्जा मारगेरिट उसकी पहली पसंद है। डोमिनो से लेकर पिज्जा हद तक सभी के वेंडर उसके घर पर आम तौर पर खड़े रहते हैं।"[10] आज का युवा वर्ग नशे का आदि हो गया है। उसे ड्रग्स जैसी महाभयंकर नशीले सेवन की लत लगी है। कॉल सेंटर की अपसंस्कृति ने देश के माहौल को बिगाड़ दिया है। लेखक इसका वर्णन करते हुए कहता है, "कॉल सेंटरों ने ड्रग की बीमारी भी पैदा की है। आसपास के ढाबों में माल भी सिगरेट आसानी से मिल जाती है। बस इसके लिए ड्रग बेचनेवाले से कनेक्शन की दरकार होती है। एक्सटेसी नाम की टेबलेट भी काफी प्रचलन में है। इसको खाने के बाद एक काल्पनिक दुनिया के दर्शन होते हैं।"[11] आज के इस भूमंडलीकृत समाज में मौज-मस्ती को अधिक महत्व दिया जा रहा है। पाश्चात्य 'लिव इन रिलेशन' (सहजीवन पद्दति) को भारत के हर छोटे-बड़े शहरों में देखा जा सकता है। इसका चित्रण करतें हुए लेखक कहते हैं, "लिव इन रिलेशन आम हैं। यही नहीं कई लडके लडकियाँ एक ही फ्लैट लेकर साथ रहते है। आपस में लडकियाँ भी बदलते रहते हैं। उनके बीच आम तौर पर कोई वायदा नहीं होता। मौज-मस्ती ही इन रिश्तों का आधार होता है।"[12] भूमंडलीकरण ने भारत के युवाओं को उधार की संस्कृति में ढाल दिया है। 'ऋणम कृत्वा द्रुतं पिबेत' (उधार लेकर घी पीओ) उनका आदर्श बन गया है। लेखक उपन्यास में आज के युवा वर्ग का भविष्य के प्रति कोई ललक या चिंता न होने के प्रति भी संकेत करते हैं, "भविष्य उनके लिए कोई मायने नहीं रखता है। अमेरिकी उधार संस्कृति में जीना चाहते हैं। सबके पास कई-कई क्रेडिट कार्ड हैं। महंगे-से-महंगे मोबाइल, लंबी कार, फ्लैट सब उधार में खरीद लिए हैं। लडकियों पर पैसा भी खुल कर लुटाते हैं। कर्ज चुकाते वक्त इसकी टोपी उसके सिर उसकी टोपी दूसरे के सिर पर रखते हैं। एक कार्ड से लोन लेकर दूसरे बैंक का कर्ज उतार देते हैं। दूसरे की बारी आती है तो तीसरे उसकी इएमआई जाती है।"[13]

भूमंडलीकरण ने सारे क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा खड़ी कर दी है। पैसे कमाने की अंधी दौड़ में एक सीधी-सादी नौकरानी मुन्नी नर्सिंग होम में अवैध गर्भपात कराती हुई, बस मालकिन बनती हैं। यहाँ तक की वह सेक्स रैकेट चलाते हुए उसकी हत्या हो जाती है। लेखक इस प्रतिस्पर्धा को बताते हुए कहते हैं, "जिस तरह से इराक के प्रेसिडेंट सददाम हुसैन को अमेरिकी प्रेसिडेंट जॉर्ज डब्लू बुश ने पेट्रोल के धंधे को यूरो से जोड़ने के लिए सजा दी थी, वैसे ही विदेशी लडकियों को अपने साथ शामिल करने की सजा मुन्नी को मिली थी। सददाम हुसैन के यूरो से पेट्रोल का बिजनेस जोड़ देने से डालर विश्व बाजार में आंधे मुँह गिर गया था, उसी तरह मुन्नी के गैंग में विदेशी लडकियों के आने के बाद धंधे के दूसरे प्लेयरों की रोजी-रोटी छिन गई थी। बात बड़ी हो या छोटी, यदि उसमें समानता हो तो उसका अंत एक जैसा ही होता है। शायद मौत।"[14]

प्रदीप सौरभ इस उपन्यास के माध्यम से भूमंडलीकरण के दुष्प्रभाव को उजागर करते हैं। इस उपन्यास के पात्र उपभोगपरस्त ग्लैमर और विलासिता के मारक, आकर्षक, अर्थप्रधान देशकाल में जी रहे हैं, वहाँ फैसलों के सही-गलत, नैतिक-अनैतिक होने पर सोचने की फुर्सत किसी को नहीं है। बस आगे दौड़ते चले जाना ही जीवन का एकमात्र मंशा है। यह उपन्यास पिछले दो दशकों में हुए परिवर्तनों, बदलावों, भौतिकवाद की चपेट में आते जा रहे संपूर्ण देश, मोबाइल क्रांति, कालसेंटरों के भयावह सच के साथ ही राजनीति में धर्म, जाति और नारों के साथ जनता की भावनाओं के साथ खेले जा रहे भयावह खेल के सच की एक-एक परतों को भी बहुत सच्चाई और निष्पक्षता के साथ उधेडा है। डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी के शब्दों में कहा जाए तो, "मुन्नी मोबाइल कुछ रिपोर्ताज है, कुछ इतिहास है, कुछ संस्मरण है और कुछ झूठी लगनेवाली सच्ची कहानी है। मजेदार बात यह है कि प्रदीप सौरभ ने देश और राजनीति के इतिहास को इतिहास ही रखा और समाज के इतिहास को कहानी का कलेवर दिया ताकि हमें बुरा न लगे, सभ्य समाज बेनकाब न हो!"[15]

सन्दर्भ

1. http://mohallalive.com/2009/12/22
2. प्रदीप सौरभ, मुन्नी मोबाइल, पृ.05
3. http://mohallalive.com/2010/09/13
4. अमिताभ राय, समीक्षा (त्रैमासिक पत्रिका) अक्टूबर-दिसम्बर 2011, पृ.37
5. प्रदीप सौरभ, मुन्नी मोबाइल, पृ.10
6. वही, पृ.11
7. वही, पृ.12
8. वही, पृ.31
9. वही,पृ.103-104
10. वही, पृ.110
11. वही, पृ.110-111
12. वही, पृ.111
13. वही,पृ.114
14. वही, पृ.154
15. mohallalive.com/2010/09/13